International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 02(I), April- June, 2026, pp. 97-101

वन्यजीव संरक्षण में सिनेमा की भूमिका: राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य (धौलपुर) के विशेष संदर्भ में

अनुपम पाराशर[1*] | डॉ. सीमा चौहान[2]

[1]शोधार्थी, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान।
[2]प्राचार्य, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: anupamparashar0000@gmail.com

Citation: पाराशर, अनुपम एवं चौहान, सीमा (2026). वन्यजीव संरक्षण में सिनेमा की भूमिका: राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य (धौलपुर) के विशेष संदर्भ में. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(02(I)), 33–36. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.2(I).8868

सार

प्रस्तुत शोध पत्र राजस्थान के सुदूरपूर्वी धौलपुर जिले के राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य में मिलने वाली दुर्लभ वन्य प्रजातियों का लघु फिल्म, डॉक्यूमेंट्री एवं डिजिटल माध्यम से संरक्षण हेतु चित्रण करता है। सिनेमा जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है। यह शोध चंबल अभयारण्य की दुर्लभ प्रजातियों जैसे– स्लॉथ बीयर, स्ट्राइप्ड हाइना, घड़ियाल, इंडियन स्कीमर एवं गंगा डॉल्फिन के प्रति मानवीय संवेदना जागरूक करने तथा सिनेमा के माध्यम से इनके अवैध शिकार को रोकने के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है। 'दस्यु प्रभावित' इस क्षेत्र की छवि बदलने तथा स्थानीय दुर्लभ जंतु प्रजातियों को वैश्विक पहचान दिलाने में विभिन्न डॉक्यूमेंट्री एवं शॉर्ट फिल्मों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सिनेमा ने धौलपुर के उक्त अभयारण्यों में बलुआ पत्थर खनन, बजरी खनन एवं अवैध शिकार जैसी गतिविधियों पर अंकुश लगाकर वन्यजीवों के प्रति सह–अस्तित्व की भावना विकसित की हैं। इस प्रकार सिनेमा स्थानीय प्राकृतिक धरोहर के दीर्घकालीन संरक्षण का एक सशक्त माध्यम साबित हुआ है।

शब्दकोश: *राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य, सिनेमा की भूमिका, घड़ियाल जैव विविधता संरक्षण।*

प्रस्तावना

सिनेमा पर्यावरण चेतना एवं वन्यजीवों के प्रति संवेदना उत्पन्न करने का महत्वपूर्ण साधन है। वर्तमान में मानवीय हस्तक्षेप एवं जलवायु परिवर्तन के कारण जैव विविधता संकट में आती जा रही है। इसके संरक्षण हेतु पारंपरिक साधनों के साथ–साथ सिनेमा जैसे 'सॉफ्ट पावर' साधनों का इस्तेमाल बदलते समय की जरूरत बन गया है। राजस्थान के सुदूरपूर्वी धौलपुर जिले के राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य विंध्य पठार एवं चंबल नदी के अद्भुत पारिस्थितिकी संगम पर स्थित हैं। अपनी विशिष्ट भौगोलिक दशाओं के कारण उक्त अभयारण्य घडियाल, रेड–क्राउंड रूफ्ड टर्टल, थ्री–स्ट्राइप्ड रूफ्ड, स्ट्राइप्ड हाइना एवं गंगा डॉल्फिन जैसी संकटग्रस्त प्रजातियों की शरणस्थली बने हुए हैं। बजरी खनन, वृक्षों की अवैध कटाई, बीहड़ों का समतलीकरण एवं प्राकृतिक आवास का विनाश उक्त वैश्विक महत्व वाली प्रजातियों के समक्ष चुनौती उत्पन्न कर रहे हैं। हम समझ सकते हैं कि विभिन्न दृश्य–श्रव्य माध्यम एवं सिनेमाई चित्रण वन्यजीवों की जीवनचर्या एवं प्राकृतिक सुंदरता को प्रदर्शित कर संरक्षण

[*] *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सिनेमा के माध्यम से धौलपुर जिले की 'बीहड़, बागी एवं बंदूक' जैसी नकारात्मक छवि को 'वाइल्ड एवं इको–टूरिज्म' से प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र

राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य चंबल नदी के किनारे एवं त्रिराज्य संरक्षी क्षेत्र है, जो कि राजस्थान, मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में प्रसारित है। धौलपुर जिले में इसका विस्तार दुर्गसी घाट (सरमथुरा) से समौना घाट (राजाखेड़ा) तक लगभग 256 कि.मी. क्षेत्र में है। चंबल नदी देश की सबसे कम प्रदूषित नदियों में से एक है। राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य का स्वच्छ जलीय पारिस्थितिकी तंत्र, अनूठे बीहड़ एवं विशिष्ट पर्यावास घडियाल, इंडियन स्कीमर, गंगा डॉल्फिन एवं दुर्लभ कछुओं का लालन–पालन करता है। यह विश्वभर के 80 प्रतिशत से अधिक घडियालों की प्राकृतिक आबादी को संरक्षण प्रदान करता है।

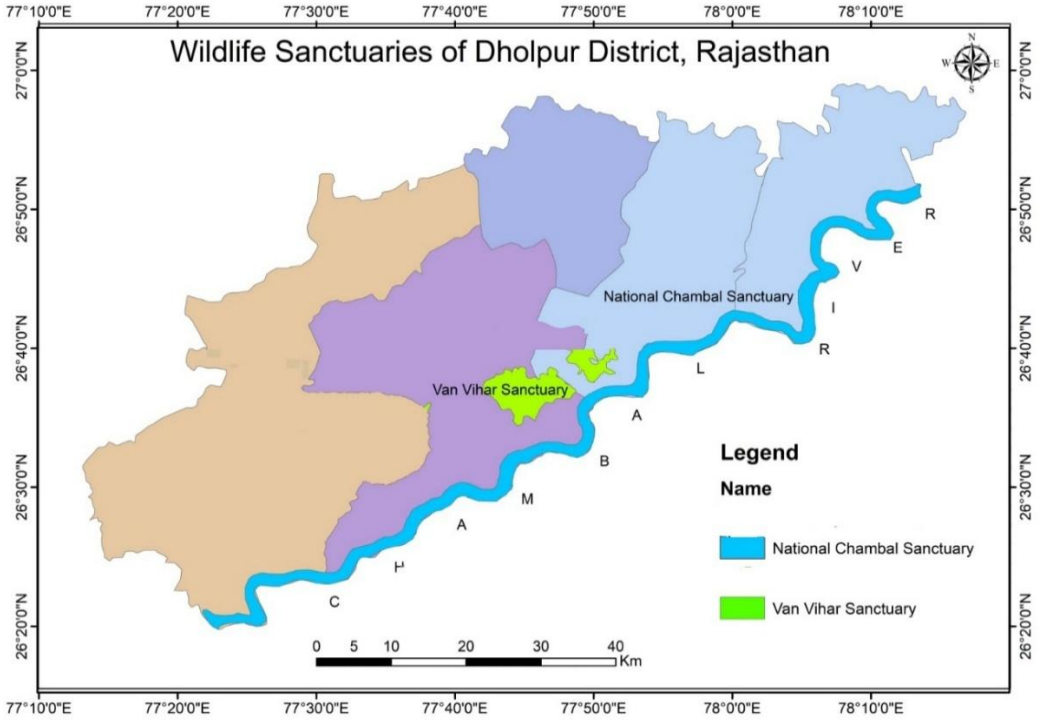

उद्देश्य

- धौलपुर जिले के राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य की दुर्लभ जीव विविधता के संरक्षण कार्यों में सिनेमा की भूमिका का आंकलन करना।
- शोध क्षेत्र में सिनेमा के माध्यम से मानव–वन्यजीव संघर्ष को कम करने की रणनीतियों को रेखांकित करना।

अभयारण्यों की जंतु विविधता का संक्षिप्त विवरण

धौलपुर (राजस्थान) जिले के राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य अपनी दुर्लभ वन्य प्रजातियों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। वनविहार वन्यजीव अभयारण्य धौलपुर रियासत के शाही शिकारगाह का साक्षी रहा है। वनविहार के पथरीले धरातल, जल निकाय एवं धोक के अर्द्ध शुष्क वनों के कारण यहां स्लॉथ बीयर एवं स्ट्राइप्ड हाइना जैसी दुर्लभ प्रजातियां निवास करती हैं। वनविहार के समीप ही रामसागर एवं ताल तलवी झील स्थित हैं जो कि

अनेक संकटग्रस्त प्रजातियों का घर है। इन्टरनेशनल यूनियन ऑफ कन्जरवेशन ऑफ नेचर (IUCN) ने संकटग्रस्त प्रजातियों को रेड डेटा लिस्ट (Red Data List) में संकलित किया है। दुनियाभर के संकटग्रस्त जीवों की यह सूची प्रकृति के स्वास्थ्य को मापने के लिए एक बैरोमीटर की तरह कार्य करती है।

राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य, धौलपुर में घडियाल, गंगा डॉल्फिन एवं मार्श क्रोकोडाइल जैसे संकटग्रस्त जीव अपने प्राकृतिक आवास में निवास कर रहे हैं। दुनियाभर की कछुओं की 26 दुर्लभ प्रजातियों में 8 प्रजातियां यहां रिकॉर्ड की गई हैं। इस अभयारण्य को 'इंपोर्टेंट बर्ड एरिया' (IN122) के रूप में भी नामित किया गया है जहां 320 से अधिक पक्षी प्रजातियां देखने को मिलती हैं।

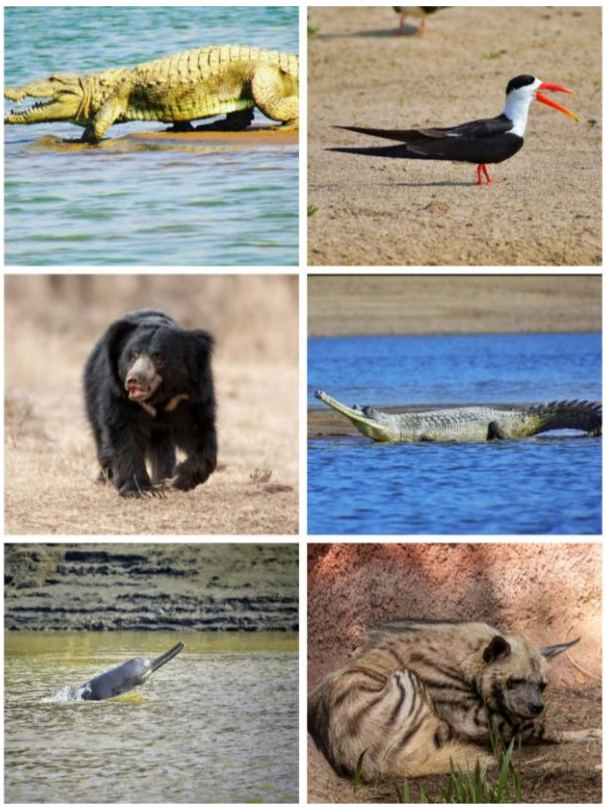

चित्रः राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य की संकटग्रस्त जंतु प्रजातियां

तालिकाः राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य की रेड–लिस्टेड वन्य प्रजातियां

क्र.सं.	सामान्य नाम	वैज्ञानिक नाम	IUCN अवस्थिति
1.	स्लॉथ बीयर	*Melursus ursinus*	सुभेद्य (VU)
2.	स्ट्राईप्ड हाइना	*Hyena hyena*	निकट संकटग्रस्त (NT)
3.	घड़ियाल	*Gavialis gangeticus*	अत्यधिक संकटग्रस्त (CR)
4.	गंगा डॉल्फिन	*Platanista gangetica*	संकटग्रस्त (EN)
5.	थ्री–स्ट्राइप्ड रूफड टर्टल	*Batagur dhongoka*	संकटग्रस्त (EN)
6.	रेड–क्राउंड रूफड टर्टल	*Batagur kachuga*	अत्यधिक संकटग्रस्त (CR)
7.	इंडियन स्कीमर	*Rynchops albicollis*	संकटग्रस्त (EN)
8.	मार्श क्रोकोडाइल	*Crocodylus palustris*	सुभेद्य (VU)

स्त्रोतः *https://iucnredlist.org*

धौलपुर जिले का शुभंकर (Mascot) माना जाने वाला इंडियन स्कीमर (पंछीरा) चंबल के सुरक्षित आवास में नेस्टिंग करता है। प्रतिवर्ष शीतकाल में यहां बार–हेडेड गूज, रिवर टर्न, रूडी शेल्ड़क, ओपनबिल स्टार्क एवं रेड मुनिया जैसे प्रवासी पक्षी हजारों किलोमीटर की यात्रा करके सुरक्षित ठिकाने की तालश में आते हैं।

वन्यजीव संरक्षण में सिनेमा की भूमिका

संरक्षण कार्यों में सिनेमा बहुआयामी भूमिका निभा सकता है। विभिन्न प्रकार की शॉर्ट फिल्म (डॉक्यूमेंट्री एवं वीडियो व्लॉग) इत्यादि के माध्यम से चंबल के बीहड़ों एवं लुप्त प्रजातियों का चित्रण कर दर्शकों के दिल में उनके प्रति प्रेम जगा सकते हैं। हम समझ सकते हैं कि पूर्व में पानसिंह तोमर (2012), बैंडेट क्वीन (1994), शोले (1975), सोन चिरैया (2019), चम्बल की कसम एवं 'मुझे जीने दो' जैसी बेहतरीन फिल्मों ने चंबल के बीहड़ों एवं प्राकृतिक सुंदरता को वैश्विक पहचान दी है। यह बदलते समय की मांग है कि चंबल के दुर्दान्त डाकूओं के इतिहास की बजाए घडियाल एवं डॉल्फिन जैसे दुर्लभ जीवों को केन्द्र में रखकर अधिकाधिक फिल्में बनाई जायें। आमजन के लिए घडियाल एवं डॉल्फिन जैसे जीवों को पानी की गहराई में देख पाना कठिन है। इस कारण चंबल का मोती अथवा चंबल की लहरें जैसी शॉर्ट फिल्मों के माध्यम से इनके जीवनचक्र को बडे पर्दे पर लाया जाये। बजरी खनन एवं बीहड़ों के समतलीकरण से इन दुर्लभ जीवों की नेस्टिंग एवं बास्किंग साइट्स नष्ट हो जाती है। सिनेमा के माध्यम से इन जीवों की मानवीय करूणा से ओत–प्रोत संघर्ष भरी कहानी को आमजन के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है। शेरनी (2021) जैसी फिल्मों ने मानव – वन्यजीव संघर्ष को बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत किया। इसी प्रकार स्लॉथ बीयर, घडियाल एवं डॉल्फिन के लिए मानवजनित खतरों के सिनेमाई चित्रण से दर्शकों के बीच व्यापक पहुंच विकसित की जा सकती है।

आज डिस्कवरी एवं नेशनल जियोग्राफिक जैसे चैनलों ने वन्यजीव संरक्षण को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाया है। राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य पर बनी 'द बून ऑफ दि कर्स' (The Boon Of The Curse) जैसी डॉक्यूमेंट्री ने चंबल की पारिस्थितिक जटिलताओं का चित्रण किया। इसमें बजरी खनन से दुर्लभ कछुओं एवं घड़ियालों के अंडों के नष्ट होने को दिखाया गया जिससे साक्ष्य आधारित संरक्षण उपायों को बल मिला है। इन प्रयासों से माननीय सर्वोच्च न्यायालय तथा राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (NGT) ने तुरंत प्रभाव से चंबल में बजरी उत्खनन पर रोक लगाई।

सिनेमा वन्यजीव शोध संरक्षण में भी सहायक है। स्लो–मोशन, नाइट विजन कैमरा एवं ड्रोन शॉट जैसी तकनीकें वन विभाग तथा शोधकर्ताओं के लिए डिजिटल आर्काइव तथा डेटाबेस की तरह कार्य करती है।

वर्तमान में वनविहार एवं चंबल अभयारण्य पर आधारित वाइल्डलाइफ व्लॉग्स (Vlogs) निरंतर यू–ट्यूब, फेसबुक एवं इंस्टाग्राम पर देखे जा सकते हैं। इस तकनीक ने चंबल सफारी तथा वनविहार को एक अलग ही पहचान दी है। सिनेमा के माध्यम से धोक से निर्वनीकरण तथा चंबल बजरी खनन पर 'इंपैक्ट स्टोरीटेलिंग' की जा सकती है।

वाइल्डलाइफ फिल्म ऑफ इंडिया द्वारा यू–ट्यूब एवं अन्य माध्यमों पर 'द चंबल रिवर' जैसी डॉक्यूमेंट्री प्रसारित की गई हैं। राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा वनविहार के सातक्यारी, महाराणा उदयभान सिंह द्वारा निर्मित कोठी वनविहार, रामसागर एवं चंबल अभयारण्य के शेरगढ फोर्ट, मचकुंड, दमोह जलप्रपात पर शॉर्ट फिल्में बनाई गई हैं जो कि धौलपुर को वाइल्ड डेस्टिनेशन के रूप में पहचान देते हैं। एरियल फोटोग्राफी से चंबल के दुर्गम बीहड़ों एवं टापुओं की सतत् निगरानी संभव हो सकी है।

शोध पद्धति

यह शोध गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार के विश्लेषण पर आधारित है। इसमें सिनेमा के प्रभाव से पहले एवं बाद में जागरूकता की तुलना की गई है। उक्त अभयारण्यों के स्थानीय निवासियों, वन्यजीव प्रेमियों तथा वन विभाग के कार्मिकों हेतु उद्देश्यपरक प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा विशेषज्ञ चर्चा आयोजित की गईं। द्वितीयक स्त्रोत के रूप में हाथी मेरे साथी, शेरनी एवं 'द चंबल रिवर' के साथ–साथ नेशनल जियाग्राफिक एवं

डिस्कवरी चैनल की वन्यजीव डॉक्यूमेंट्री का विश्लेषण किया गया। इसमें एकत्रित जानकारी का तार्किक एवं सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया।

परिणाम एवं सुझाव

इस शोध की क्रियान्विति से यह पता चला है कि सिनेमा अदृश्य को दृश्य बनाने में सक्षम है। स्थानीय दुर्लभ प्रजातियों के संरक्षण में सिनेमा एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में स्थापित हो सकता है जो कि वनविहार एवं चंबल अभयारण्य के जटिल पारिस्थितिकी तंत्र एवं मानवीय संवेदनाओं के मध्य सेतु के रूप में कार्य करता है। हम देख सकते हैं कि दैनिक भास्कर एवं राजस्थान पत्रिका जैसे दैनिक समाचार पत्रों में निरंतर स्थानीय वन्यजीव संरक्षण पर आधारित न्यूज आर्टिकल प्रकाशित होते रहते हैं। इनके साथ–साथ सिनेमा का चित्रण इन्हें और अधिक प्रभावी बना सकता है। सिनेमा में 'इमोशनल अपील' होती है जो कि घड़ियाल, डॉल्फिन, स्लॉथ बीयर एवं स्ट्राइप्ड हाइना जैसे संकटग्रस्त जीवों के संरक्षण में अत्यंत प्रभावी है। वी आर (Virtual Reality) तकनीक का उपयोग कर 'वर्चुअल चंबल एवं वनविहार सफारी' का आमजन को अनुभव कराया जाए। घड़ियाल, बाटागुर कछुआ, मार्श क्रोकोडाइल एवं स्लॉथ बीयर के जीवन पर आधारित सिनेमैटिक शॉर्ट्स तैयार किए जाऐं जो कि इंस्टाग्राम एवं यू–ट्यूब रील्स के लिए उपयोग में लिये जा सकते हैं। वन्यजीव सप्ताह (अक्टूबर माह का प्रथम सप्ताह), क्रोकोडाइल डे (17 जून), डॉल्फिन डे (14 अप्रेल), स्लॉथ बीयर डे (12 अक्टूबर) एवं टर्टल डे (23 मई) पर थीम आधारित डॉक्यूमेंट्री एवं शॉर्ट्स फिल्में रिलीज की जायें। वर्तमान में अमर मुदगल, मुन्ना निषाद, राजीव तोमर एवं अक्षय पाराशर जैसे वन्यजीव प्रेमी चंबल की दुर्लभ जंतु विविधता को सिनेमाई तकनीकों के माध्यम से संरक्षित करने में लगे हुए हैं।

शोधकर्ता को कुछ चुनौतियां भी दृश्य हुई हैं जैसे– वाइल्डलाइफ डॉक्यूमेंट्री में स्लॉथ बीयर, क्रोकोडाइल एवं घड़ियालों को हिंसक जीवों के रूप में चित्रित किया जा रहा है जिस कारण दर्शकों में इन दुर्लभ जीवों के प्रति घृणा एवं भय की भावना पनपती है। हिन्दी एवं अंग्रेजी में निर्मित वाइल्ड फिल्मों की स्थानीय ब्रज भाषा में डबिंग नहीं की जाती है जिस कारण संरक्षण का संदेश सीमित रहता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Khanna, A. (2021): Impact of Wildlife Documentaries on local community, *Vol. 2, Journal of media and communication.*
2. Rust, S. & Monani, S. (2013): Eco Cinema theory and practice, Routledge Publishers, Noida (U.P.).
3. Patwardhan, A. (2019): The role of visual media in Endangered species protection, *Environmental communication quarterly.*
4. Thapar, V. (1997): Wild India, Aleph Book Comp., New Delhi.
5. National Geographic Documentary: The last river (Chambal Ecosystem Analysis).
6. Roundglass Sustain (2025): "Boon of the Curse: Unholy Chambal (Documentary), Director – Shivang Mehta.
7. Bedi Brothers (2024): Chambal Wild Adventures with Bedi Bros., Prasar Bharati Archive.
8. Indialogs (2025): Eco – Preservation of Wildlife in Indian Cinema: A review of Sherni Movie, Director – Amit Masurkar.

❑❑❑